

आपके पत्र थारे-थारे : आपकी भावनाओं के ह्स्कारे

प्रिय पाठको,

'रेल दर्पण' पत्रिका के बारे में आपके पारस्वी विचारों को हम तक पहुँचाने वाली आपकी थ्यारी-थ्यारी चिट्ठियाँ हमारे प्रवासों के प्रतिफल का आईना भी हैं और इन्ही से हमें आगे बढ़ते रहने की ताकत भी मिलती है। जनवरी, 2011 में प्रकाशित 'हीरक जयंती विशेषांक' की तारीफ और समालोचना करने वाली ढेर सारी चिट्ठियाँ हमें मिली हैं। इन्ही में से कुछ चुनिंदा स्वतों तथा समाचार पत्रों में प्रकाशित समीक्षाओं का प्रकाशन हम इस 'पाठक-पीठिका' स्तम्भ के अंतर्गत कर रहे हैं। इस बार की स्वास बात यह है कि 'नवभारत', 'प्रातःकाल', 'दैनिक नवज्योति', 'हमारा महानगर', 'नई दुनिया', 'दैनिक



भास्कर', 'गुजरात वैभव', 'चशोभुजि' और 'जागरूक टाइम्स' जैसे प्रतिष्ठित हिंदी एवं अन्य भाषाओं के समाचार पत्रों में प्रकाशित समीक्षाओं में 'रेल दर्पण' के 'हीरक जयंती विशेषांक' की खुलकर तारीफ की गयी है, यही माननीय रेल राज्य मंत्री श्री भरतसिंह सोलंकी एवं पश्चिम रेलवे के तत्कालीन अपर महाप्रबंधक श्री एस.के. शर्मा के अलावा कुछ वरिष्ठ अधिकारियों एवं पत्रकारों ने स्वयं पत्र प्रेषित कर 'रेल दर्पण' पत्रिका को काफी सराहा है। 'रेल दर्पण' का सम्पादकीय परिवार आप सभी के प्रति अपनी दिनझ कृतज्ञता ज्ञापित करता है। आपकी भावनाओं के हरक़ारे आपके पत्रों का सिलसिला ऐसे ही जारी रहे, यही हमारी मंगल कामना है।

प्रधान सम्पादक

SPECIAL GREETINGS FROM HON'BLE MINISTER OF STATE FOR RAILWAYS

Letter sent to GM, Western Rly:-

It is a matter of pleasure to know that Western Railway has published Diamond Jubilee Special issue of its house magazine "Rail Darpan" on the occasion of 60th year of its formation. It is given to understand that this magazine had won many prestigious awards in last 11 years at national level as best house magazine. Besides highlighting the literary talent of employees of Western Railway through their Poems, Stories, Features and other articles, this magazine has been popular for the valuable contribution by legendary Hindi and Urdu poets like S/Shri Gulzar, Kaify Azmee, Javed Akhtar, Nida Fazli, Shail Chaturvedi, Hullad Muradabadi, Gopaldas Neeraj,



Shrimati Maya Govind, Ashkaran Atal, Ashok Chakradhar and Suryabhanu Gupta etc. It has also carried special interviews of Bollywood celebrities.

On going through the special issue of 'Rail Darpan' on the occasion of 60th year of the formation of Western Railway, I feel immense pleasure to note the contents, the extent of its comprehensive coverage and the excellent fashion in which the magazine has been formulated, including the rare photographs of 1951 formation ceremony. I appreciate the endeavour and congratulate the whole Editorial team of this magazine and wish all success to this magazine for a long glorious journey!

Bharatsinh Solanki

Minister of State for Railways, Govt. of India, New Delhi

SPECIAL LETTER OF APPRECIATION FROM EX ADDL. GENERAL MANAGER

Dated: 23rd Feb, 2011

My dear Sharat,

I am happy to note the initiative taken by your team of officers and staff in publishing the "Diamond Jubilee Special" issue of Western Railway's Popular Magazine "Rail Darpan". I have gone through this issue and found its overall contents, layout and printing quality excellent. The cover page as well as other colour pages have attractive photographs and designs and selection of material show the editorial skills for which this magazine has been winning various prestigious National Awards since last 11 years. In this issue the center spread New Year calendar based on rare photographs of the inaugural ceremony of Western and Central Railways on 5th Nov. 1951, is noteworthy. Similarly, "Down Memory Lane" takes us into our glorious past. Special features by PHODs and DRMs are



a good source of information. Your special feature on Public Relations is also a creative initiative to redefine the Public Relations with a different angle. It can definitely help in exploring new possibilities in the field of Public Relations.

As an avid reader of "Rail Darpan", I congratulate your entire editorial team for such a nice publication of in-house magazine which not only educates, informs and entertains the readers, but also plays a vital role in promoting "Raj Bhasha - Hindi" and creative talent of the employees of Western Railway.

My congratulations, May the tempo be kept high.

With best wishes,
Yours Sincerely,

S.K. SHARMA

Ex Addl. General Manager, Western Railway, Churchgate

दैनिक भास्कर, इन्दौर में प्रकाशित समीक्षा

औरण से लेकर अंतिम तक... कुल 76 पृष्ठ, जिनके जरिये 'पश्चिम रेलवे' के 60 वर्षीय स्फुर पर निकलना एक रोचक अनुभव रहा है। 'रेल दर्पण' के इस 'हीरक जयंती विशेषांक' की खासियत है कि प. रे. के महाप्रबंधक रवीन्द्र नाथ वर्मा के शुभकामना संदेश से शुरुआत करके जब तक हम विशेष अतिथि सूर्यभानु गुप्त की गुज़लों पर पहुँचेंगे, यह 'रेल' हमें 'पश्चिम' का पूरा 'दर्पण' दिखा चुकी होगी। सचमुच, 'रेल दर्पण' के प्रधान सम्पादक और मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी शरत चन्द्रायन ने अपनी रेलवे के समृद्ध एवं गौरवशाली अतीत को विविध तस्वीरों तथा सामग्री के मार्फत हम तक पहुँचाया है- बधाई! कार्यकारी सम्पादक सी. नितिन कुमार डेविड ने कॉमेडियन राजू श्रीवास्तव के माध्यम से यात्रियों का हित साधा है, जबकि सम्पूर्ण अंक हेतु वरिष्ठ कार्यकारी सम्पादक गजानन महतपुरकर की मेहनत स्पष्ट परिलक्षित होती है। इस बार भी जहाँ अलग-अलग मंडलों के प्रबंधकों को अपनी उपलब्धियाँ गिनाने का अवसर मिला, वहीं चिकित्सा, विद्युत, भंडार, संरक्षा और यात्री सेवाओं के लिए किये गये प. रे. के प्रयासों को प्रमुखता दी गई है। इसके अलावा 'पश्चिम रेलवे' की पहली मोटर बूमेन प्रीति कुमारी तथा सुश्री अपर्णा अपराजित, संतोष सुपेकर, अनिता

रेल दर्पण-60 सालों का सुनहरा स्फुर !

आगाशे और वर्षा काले को भी स्थान देकर 'दर्पण' ने अपने कर्मचारियों का उत्साह बढ़ाने जैसा सराहनीय कदम उठाया है। राजभाषा की सार्थकता पर मुख्य राजभाषा अधिकारी के.के.अटल का लेख पठनीय है। इस अंक के मध्य में चार पृष्ठों का वार्षिक कैलेंडर भी है, जहाँ कुछ दुर्लभ तस्वीरें अतीत में ले जाने का ज़िम्मा उठाती हैं। यँ तो 'रेल दर्पण' में 'सूडोकू' की उपयोगिता समझ से परे लगी, किंतु 'वैचारिकी' में डॉ. शारदा सारसर के लेख और 'व्यंग्य-वीथिका' में रवीन्द्र कुमार की 'रेलवाई' को हमारा दिमाग झिंझोड़ने में सफलता प्राप्त हुई। 'स्वास्थ्य-चर्चा' और 'कथा-कुंज' पढ़कर आप कुछ पलों के लिए मानसिक तनावों से मुक्ति भी पा सकते हैं। जहाँ तक विशेषांक में अंग्रेज़ी खंड की बात है, तो यादों के गलियारे से, पी.आर. पर विशेष फीचर के अलावा डांसिंग मैन जीतेन्द्र ने इंटरव्यू में प.रे. के प्रति अपने जुड़ाव का बढ़िया बखान किया है। सो, आखिर में हम कह सकते हैं कि मंडलों के अंचलों से, सामयिक गतिविधियाँ, काव्यात्मक अभिव्यक्ति, सखियों का संसार, कुशल प्रशासकों के दिल से काव्य उपासना और चर्चगेट स्टेशन के सौंदर्यीकरण प्रोजेक्ट पर विशेष फोटो फीचर... इन सभी से सजा यह विशेषांक वाकई संग्रहणीय है! **धर्मेन्द्र प्रताप सिंह, वरिष्ठ पत्रकार**

विकास की गाथाओं के साथ भविष्य की उड़ान भी समेटे हुए !

नवभारत, मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' का हीरक जयंती विशेषांक विकास की गाथाओं के साथ भविष्य की उड़ान को भी अपने आप में समेटे हुए हैं। 'सखियों के संसार' में श्रीमती अनिला वर्मा (तत्कालीन अध्यक्षा, पश्चिम रेलवे महिला समाज सेवा समिति) की कविता 'प्रतिज्ञा' सामयिक होने के साथ-साथ उपयोगी भी लग रही है। इसी तरह मुख्य बिजली इंजीनियर ए.के. मल्होत्रा, भंडार नियंत्रक मंगत राय, मंडल रेल प्रबंधक गिरीश पिल्लई, एस. के. पाठक, वेदपाल, अशोक गरुड़ एवं आर. कुप्पन के लेख भी ज्ञानवर्द्धक हैं। कॉमेडियन राजू श्रीवास्तव तथा फिल्म अभिनेता जीतेन्द्र के साक्षात्कार पत्रिका की बहुआयामी छवि को मजबूती दे रहे हैं। पत्रिका का अंग्रेज़ी खंड भी काफी समृद्ध प्रतीत हो रहा है। प्रधान सम्पादक और मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी शरत चन्द्रायन का लेख जहाँ 'जनसम्पर्क' के आशय से लेकर

उसकी उपयोगिता को रेखांकित कर रहा है, वहीं मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) सुबोध जैन के लेख में भविष्य के साथ बुनियादी प्रकल्पों की कदमताल दृष्टिगोचर हो रही है। एस. भट्टाचार्य, अमिताभ लाल, जी.एस. बनर्जी और ए.के. श्रीवास्तव के लेखों से पत्रिका का अंग्रेज़ी खंड भी रोचक और शिक्षाप्रद हो गया है। सामयिक गतिविधियों के तहत पिरोई गई जानकारीयों पश्चिम रेलवे की उपलब्धियों को दर्शा रही हैं। मुख्य माल परिवहन प्रबंधक शैलेन्द्र कुमार की कविताओं-दृढ़ कदम और रहस्यात्मकता में उनका दृढ़ संकल्प झलक रहा है। विशेष अतिथि रचनाकार के रूप में सूर्यभानु गुप्त की गुज़लें पत्रिका में साहित्यिक रंग घोल रही हैं। श्रीमती अर्चना महतपुरकर द्वारा प्रस्तुत डायफ़्ट्स डोसा बनाने की विधि से 'हीरक जयंती विशेषांक' और टेस्टी हो गया है। **कमल मिश्र, वरिष्ठ पत्रकार**

हमारा महानगर, मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

गौरवशाली इतिहास की सैर कराती रेल पत्रिका

पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' का जुलाई-दिसम्बर 2010 का अंक हीरक जयंती विशेषांक के रूप में निकाला गया है। यह पत्रिका पश्चिम रेलवे के 60 सालों के गौरवपूर्ण इतिहास की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करती है।

पत्रिका में पश्चिम रेल के विविध विभागों के कार्यों का विश्लेषण करने का सुंदर प्रयास किया गया है। पत्रिका में पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधाओं के लिए किये गये विशेष सराहनीय कार्यों की जानकारी दी गई है। पत्रिका की शुरुआत महाप्रबंधक ने पश्चिम रेलवे के इतिहास के साथ-साथ विभिन्न विभागों में हुए कार्यों तथा आगामी भविष्य में होने वाले महत्वपूर्ण कार्यों के विषय में जानकारी देते हुए आने वाले दिनों में इन्हें और बेहतर बनाने की बात कही है। रेलवे चिकित्सा सेवाओं पर प्रकाश डालते डॉ. सुहास नांदगावे ने भारतीय रेल के चिकित्सा इतिहास से लेकर वर्तमान तक के विषय में उत्कृष्ट जानकारी प्रस्तुत की है। पश्चिम रेलवे द्वारा चलाई गई आधुनिक लोकल ट्रेन के विषय में मुख्य विद्युत अभियंता ए. के. मल्होत्रा ने डीसी से एसी कर्षण में बदलने की प्रक्रिया को विस्तार से प्रस्तुत किया है। सामग्री प्रबंधन की प्रगति, मुंबई मंडल में यात्री सेवाओं में विस्तार, रतलाम मंडल के विकास, राजकोट रेल के इतिहास, अहमदाबाद मंडल गाथा तथा भावनगर

के गौरवशाली अतीत जैसे उत्कृष्ट और संग्रहणीय लेख पत्रिका में दिये गये हैं, जिन्हें पढ़ने पर रेलवे की आधुनिक छवि उभरकर सामने आती है। पत्रिका में मशहूर कॉमेडियन राजू श्रीवास्तव का साक्षात्कार पत्रिका के कार्यकारी सम्पादक नितिन डेविड ने किया है, जिसमें उन्होंने राजू श्रीवास्तव के माध्यम से रेलवे के विविध पहलुओं को स्पर्श किया है। पत्रिका में पश्चिम रेलवे की स्थापना के दुर्लभ चित्रों का शानदार कैलेंडर पेश किया गया है, जिसमें पश्चिम रेल के उद्घाटन के अवसर की दुर्लभ तस्वीरें दी गयीं हैं। पत्रिका की वैचारिकी में मुंबई की वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. शारदा सारसर ने ब्ला-ब्ला की आग में झुलसते बचपन पर बेहतरीन लेख प्रस्तुत किया है। साथ ही व्यंग्य वीथिका, स्वास्थ्य चर्चा एवं विविध मंडलों द्वारा कार्यक्रमों की जानकारी भी दी गई है। पश्चिम रेलवे के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी एस के जैन ने विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी है तथा मुख्य परिचालन प्रबंधक अमिताभ लाल ने पश्चिम रेलवे के विकास पर प्रकाश डाला है। पत्रिका में साहित्य को भी व्यापक स्थान दिया गया है, जिसके तहत कविता, व्यंग्य, कहानी, पुस्तक समीक्षा आदि को शामिल किया गया है।

धीरज सिंह, वरिष्ठ पत्रकार

नई दुनिया, इन्दौर में प्रकाशित समीक्षा

पश्चिम रेलवे 5 नवम्बर, 2010 को अपने गौरवशाली अतीत के 60 वें वर्ष में प्रवेश कर इस वर्ष अपनी हीरक जयंती (डायमंड जुबली) मना रही है। रेल दर्पण का यह अंक इसी को समर्पित है। पश्चिम रेलवे अपने कार्यों और कार्मिकों की रचनाशीलता उजागर करने के लिए पिछले 11 वर्षों से रेल दर्पण प्रकाशित कर रही है।

रेलवे का जनजीवन में महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसीलिए मन में रेलवे के भीतर की गतिविधियों को जानने की सहज इच्छा जन्म ले लेती है। रेलवे के रहस्यमय संसार के हर पहलू से परिचित कराने के अपने प्रयासों में 'रेल दर्पण' काफी सफल रही है। 'कथा कुंज' तथा 'जिंदादिली और उल्लास

रेलों के कार्यों और रचनाशीलता का संसार

के हरकारे' के अंतर्गत रेलवे के भीतर छिपे खास व्यक्तित्वों का परिचय प्राप्त होता है, तो वैचारिकी में जीवन के विविध पक्षों पर विचार रखे गये हैं। 'संस्मरण-चिंतन-मंथन' में प्रस्तुत संस्मरण और 'व्यंग्य-वीथिका' के माध्यम से पश्चिम रेलवे का आत्मचिंतन और स्वयं पर हँस सकने का माहा प्रदर्शित होता है। 'स्पेशल फीचर ऑन डायमंड जुबली' में रेलवे से सम्बंधित आलेख और गतिविधियों को प्रकाशित किया गया है। इसमें सामयिक गतिविधियाँ, सखियों का संसार और खास डिश बनाने के सम्बंध में भी जानकारी का अच्छा संकलन है।

रजनीश बाजपेई, वरिष्ठ पत्रकार

गौरवशाली अतीत, सुखद वर्तमान और सुनहरे भविष्य का दर्पण

पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका रेल दर्पण का 'हीरक जयंती विशेषांक' अपने गौरवशाली अतीत और सुखद वर्तमान के विस्तृत उल्लेखों के सहारे स्वर्णिम भविष्य का एहसास कराता है। पत्रिका के संरक्षक एवं महाप्रबंधक आर. एन. वर्मा का 'स्वाधीनता दिवस संदेश' पश्चिम रेलवे द्वारा माल लदान, यात्री सुविधाओं, परिवहन विकास एवं सुधार, ऊर्जा संरक्षण, खेल सुरक्षा, दुर्घटना बचाव, स्वास्थ्य एवं कर्मचारी हित में उठाए गये कदमों की व्यवस्थित एवं प्रभावशाली प्रस्तुति है। 'सखियों का संसार' शीर्षक के अंतर्गत प्रस्तुत चित्र गैलरी पश्चिम रेलवे महिला समाज सेवा समिति की सामाजिक गतिविधियों एवं सेवा भाव को प्रस्तुत करती है। समिति की अध्यक्ष श्रीमती अनिला वर्मा की कविता 'प्रतिज्ञा' यात्रियों को सुरक्षित यात्रा का संदेश देती है। 'हीरक जयंती पर विशेष लेख' के अंतर्गत प्रस्तुत डॉ. सुहास नांदगावे का लेख पश्चिम रेलवे के विभिन्न मंडलों में हुए चिकित्सकीय सेवाओं के विकास एवं विस्तार पर प्रकाश डालता है। मुख्य बिजली इंजीनियर ए.के. मल्होत्रा की प्रस्तुति डीसी-एसी परिवर्तन, ऊपरी उपस्कर, ड्यूल वोल्टेज, इलैक्ट्रिक मल्टिपल यूनिट तथा सीमेंस रेको के बारे में जानकारी देता विश्लेषणात्मक लेख है। भंडार नियंत्रक मंगत राय का लेख पश्चिम रेलवे की भंडारण व्यवस्था में हुए गुणोत्तर सुधार, तकनीकियों के उचित प्रयोग एवं भंडारण व्यवस्था की जानकारी द्वारा भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डालता एक संग्रहणीय लेख है। मंडल रेल प्रबंधक गिरीश पिल्लई का लेख यात्रियों के हित में रेलवे प्रशासन द्वारा किये गये सुधारों तथा रेल कर्मचारियों के हित में किये जा रहे विभिन्न प्रयासों एवं योजनाओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। एस.के. पाठक का लेख जहाँ रतलाम मंडल के विकास को प्रस्तुत करता है, वहीं वेद पाल का लेख राजकोट मंडल के समृद्ध एवं गौरवपूर्ण इतिहास का आईना है। अशोक एस. गरुड़ का लेख अहमदाबाद मंडल की गौरव गाथा है, तो आर. कुप्पन का लेख भावनगर के गौरवशाली अतीत की व्याख्या करता है। गरुड़ के लेख को बी.बी. एंड सी आई रेलवे, बड़ौदा स्टेट रेलवे एवं स्टेट ऑफ द्रांग्वा के प्रतीक चिन्ह एवं विवरण संग्रहणीय बना देते हैं।

पत्रिका के कार्यकारी सम्पादक सी.एन. के डेविड द्वारा लिया गया हास्य अभिनेता राजू श्रीवास्तव का साक्षात्कार पत्रिका में चार चांद लगाता है। विलेश चंद्र का लेख बी.बी. एण्ड सीआई रेलवे के 150 और पश्चिम रेलवे के 60 वर्षों की सफल एवं अनवरत जारी यात्रा को प्रस्तुत करता ज्ञानप्रद एवं संग्रहणीय लेख है। रेलवे प्रशासन द्वारा राजभाषा के विकास एवं उसको व्यापक बनाने के लिए किये जा रहे प्रयासों की सुंदर प्रस्तुति राजभाषा अधिकारी के.के. अटल ने अपने लेख में की है। संतोष कुमार झा का संकलन 'योजना विभाग एवं प्रमुख योजनाएँ- इतिहास के झरोखे से' बेहद ज्ञानवर्द्धक है। कथाकुंज में श्रीमती इन्दु सिन्हा की कहानी 'श्राद्ध' ब्राह्मण परिवार की जीवनचर्या को दर्शाती है जिस सामाजिकता

जागरूक टाइम्स, मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

के साथ पूरी होती है, वह कहानी को उत्कृष्टता के शीर्ष पर पहुँचा देती है। संतोष सुपेकर की रचना 'पवित्र-पाप' एक ऐसे पाप का वर्णन करती है, जिसके समक्ष पाप-पुण्य की सारी व्याख्याएँ व्यर्थ एवं बौनी हो जाती हैं। नव वर्ष पर रेल दर्पण की ओर से विशेष उपहार स्वरूप प्रस्तुत वर्ष 2011 का कैलेंडर गौरवपूर्ण इतिहास, वक्त के साथ रेलवे के बढ़ते कदम, दुर्लभ छायाचित्रों के बेमिसाल संयोजन और हृदय स्पर्शी शब्द सृजन के साथ पत्रिका के वरिष्ठ कार्यकारी सम्पादक गजानन महतपुरकर की साहित्यिक सृजनात्मकता को दर्शाता है। वैचारिकी के अंतर्गत डॉ. शारदा सारसर का लेख बच्चों की भावनाओं एवं अभिभावकों की जिम्मेदारी का एहसास दिलाता बेहद भावनात्मक लेख है। के.आर. बरमेचा का लेख 'संस्मरण-चिंतन-मंथन' सरकारी विभागों की मेहनत, ईमानदारी एवं निष्ठा के बावजूद थोड़ी सी इंसानियत की कमी एवं गैर जिम्मेदाराना रवैये के कारण सहकर्मियों की तकलीफ एवं निंदा का कारण बनने की अभिव्यक्ति है। रवीन्द्र कुमार की रचना 'रेलवाई' हास्य के पुट के साथ अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अपने पद एवं पावर के किए जा रहे दुरुपयोग तथा आमजन द्वारा रेलवे तथा सार्वजनिक सम्पत्ति की चोरी एवं पहुँचायी जा रही क्षति को दर्शाती है। अंग्रेजी खण्ड में DOWN MEMORY LANE में प्रस्तुत की गई पश्चिम रेलवे की पत्रिका में 5 नवम्बर, 1951 को हुए मध्य एवं पश्चिम रेलवे के उद्घाटन समारोह पर आधारित लेख तथा THE TIMES OF INDIA में प्रकाशित खबर की प्रतिलिपियाँ काफी पुराने दिनों की यादों को यथार्थ में महसूस कराती हैं। पत्रिका के प्रधान सम्पादक शरत चंद्रायन का लेख ART, SCIENCE, HISTORY AND FUTURE OF PUBLIC RELATIONS जनसम्पर्क के इतिहास एवं वर्तमान स्वरूप के बारे में जानकारी देता एक सारगर्भित लेख है। पत्रिका के कार्यकारी सम्पादक होरमज मोहता तथा सह सम्पादक अनुभव सक्सेना द्वारा फिल्म अभिनेता जीतेन्द्र का लिया गया साक्षात्कार पत्रिका को संग्रहणीय बना देता है। सामयिक गतिविधियों के अंतर्गत प्रस्तुत फोटो गैलरी पश्चिम रेलवे के विभिन्न मंडलों में हुए कार्यक्रमों, आयोजनों एवं प्रतियोगिताओं का सजीव वर्णन करती है। श्रीमती अर्चना महतपुरकर की पेशकश 'ड्रायफ्रूट्स डोसा' गृहिणियों के लिए बेहद उपयोगी है। संतोष कुमार झा की रचना 'एक इंसान की चिट्ठी' जहाँ भावनाओं को झकझोरती है, वहीं 'गांधी जिंदा है!' अंतरात्मा को जगाने एवं इंसान बनने को प्रेरित करती है। पत्रिका के अंत में प्रस्तुत अतिथि रचनाकार सूर्यभानु गुप्त की गज़लें पत्रिका को रचनात्मकता के शीर्ष पर पहुँचा देती हैं। पत्रिका में प्रस्तुत सभी लेखों, कविताओं, व्यंग्यों एवं गज़लों के ज़रिये सम्पादकीय टीम द्वारा जितने शानदार एवं व्यवस्थित ढंग से पत्रिका को सजाया, सँवारा एवं प्रस्तुत किया गया है, उसके लिए सम्पादकीय मंडल बधाई का पात्र है।

अजीत कुमार राय, संस्करण सम्पादक

गुजरात वैभव, अहमदाबाद में प्रकाशित समीक्षा

दूरियाँ हर तरह की मिटाते हैं हम, स्थलों और दिलों को करीब लाते हैं हम! ऐसे ही भावनात्मक उद्देश्य के संग लगातार चल रही पश्चिम रेलवे अपनी यात्रा के साठ वर्ष पूरे कर चुकी है। इसकी हीरक जयंती के अवसर पर प्रकाशित रेल दर्पण के विशेषांक को मिले शुभकामना संदेश और समस्त रेल कर्मचारियों का सहयोग काबिले तारीफ है। लोकप्रिय गृह पत्रिका रेल दर्पण के हीरक जयंती विशेषांक को पश्चिम रेलवे के समृद्ध व गौरवशाली अतीत की विविध तस्वीरों से संजोया गया है। पिछले साठ बरसों के महत्वपूर्ण चित्रों को यादगार कैलेंडर के रूप में पेश किया गया है। साथ ही यह पत्रिका पश्चिम रेलवे पर विभिन्न क्षेत्रों में हुए विकास के व्यापक पहलुओं से अवगत कराती है। हीरक जयंती विशेषांक के अंतर्गत पश्चिम रेलवे के सभी विभागों और मंडलों में पिछले कुछ वर्षों में हुई प्रगति का लेखा-जोखा सम्बंधित प्रधान विभागाध्यक्षों एवं मंडल रेल प्रबंधकों के विशेष लेखों के जरिये पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास भी

रेल दर्पण : अपनी यात्रा पर अगुसर

सराहनीय है। रेल दर्पण पत्रिका अपनी श्रेष्ठता के लिए लगातार आठवें वर्ष दो राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है। रेल दर्पण के हीरक जयंती विशेषांक में कथा कुंज, व्यंग्य-वीथिका, वैचारिकी, सामयिक गतिविधियाँ, काव्यात्मक अभिव्यक्ति, सांस्कृतिक हलचल, तस्वीर बोलती है, मंडलों के अंचलों से, स्वास्थ्य चर्चा और सखियों का संसार जैसे नियमित स्तम्भों ने अपनी रोमांचक छटा बिखेरी है। इस बार से 'जिंदादिली और उल्लास के हरकारे' स्तम्भ शुरू किया गया है। विशिष्ट अतिथि रचनाकार की महफिल में कवि सूर्यभानु गुप्त ने जलवे बिखेरे हैं। अंग्रेजी में बॉलीवुड के डॉसिंग स्टार जैतेन्द्र का साक्षात्कार भी अनूठा है। डबल डोज में कॉमिडी के बादशाह राजू श्रीवास्तव का साक्षात्कार (क्या भाई! टिकट लेने का भाई!) चटपटी चाट का काम करता है। कुल मिलाकर पश्चिम रेलवे के साठ बरस के अनूठे कार्यों व मेहनत का परिणाम है लोकप्रिय 'रेल दर्पण' का 'हीरक जयंती विशेषांक'।

अतीत से वर्तमान तक का सफ़र है हीरक जयंती विशेषांक

मेरी तलाश में जब भी नज़र उठाओगे,
मुझे उजालों का पैगाम देता पाओगे।

विगत 11 वर्षों से लोगों के जीवन में उजालों का पैगाम देती पश्चिम रेलवे द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका रेल दर्पण अपनी कलात्मक उत्कृष्टता, रूप सज्जा, वैचारिक अभिव्यक्ति, नित नये कलेवर और विशेष सामग्री की बदौलत भारतीय रेल प्रणाली में एक जाना पहचाना नाम बन गयी है। तभी तो पत्रिका के समग्र प्रतिमानों को देखते हुए एसोसिएशन ऑफ बिजनेस कम्युनिकेशन ऑफ इंडिया द्वारा लगातार आठवीं बार दो राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जाना पत्रिका के लिए गौरव की बात है। यह सम्पादक मंडल की मेहनत का प्रतिफल है।

पश्चिम रेलवे अपने जीवन के 60 वर्षों का सफ़र तय कर रही है। इन 60 वर्षों के सफ़रनामे के दस्तावेज़ अलग-अलग माध्यमों से दर्शाने का प्रयास रेल दर्पण ने हीरक जयंती विशेषांक के रूप में किया है, जिसमें उल्लेखनीय सफलता भी मिली है। 60 सालों के सफ़र में पश्चिम रेलवे ने कामयाबी की जिन बुलंदियों को छुआ है, उसके अतीत को विभिन्न तस्वीरों के जरिये तथा वर्ष 2011 के कैलेंडर द्वारा निरूपित करने के अलावा नवम्बर, 1951 के टाइम्स ऑफ इंडिया के मुख पृष्ठ पर छपे समाचार की कतरन को पत्रिका में स्थान देकर पाठकों को सुनहरे इतिहास की तरफ ले जाने का एक सार्थक प्रयास किया गया है। रेल दर्पण में एक तरफ जहाँ वैचारिकी में ब्ला-ब्ला की आग में झुलसता बचपन में डॉ. शारदा सारसर ने मां-बाप की बढ़ती अपेक्षाओं के तले दबते बचपन का कड़वा सच प्रस्तुत करके सोचने के लिए मजबूर किया है, वहीं दूसरी तरफ 'जिंदादिली और

दैनिक यशोभूमि, मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

उल्लास के हरकारे' के रूप में नया कॉलम शुरू करके रेल दर्पण ने पश्चिम रेलवे में छिपी प्रतिभाओं को सामने लाने का सराहनीय प्रयास किया है। काव्यात्मक अभिव्यक्ति ने रेल कर्मियों को सार्थक अभिव्यक्ति का मंच प्रदान किया है। मशहूर कॉमेडियन राजू श्रीवास्तव के साक्षात्कार में बिना टिकट यात्रा करने वालों व पटरों पार करने वालों को दिया गया संदेश, सामाजिक अपराधों को कम करने में कारगर सिद्ध होगा।

'इतिहास के 6 दशक-राजभाषा की भूमिका सार्थक' में मुख्य राजभाषा अधिकारी के.के. अटल द्वारा रेल की भाषा-मेल की भाषा-हिंदी भाषा को जन-जन की भाषा बनाने का संदेश काबिले तारीफ है। 'पेशे से कुशल प्रशासक, दिल से है काव्य उपासक' कॉलम में शैलेंद्र कुमार व संतोष कुमार झा द्वारा प्रस्तुत 'दृढ़ कदम, रहस्यात्मकता, एक इंसान की चिट्ठी व गांधी जिंदा है' कविताओं के माध्यम से एक नई चेतना पैदा करने का प्रयास किया गया है। विशेष अतिथि रचनाकार सूर्यभानु गुप्त की गज़लों को रेल दर्पण ने प्रस्तुत करके सच के सामने से पर्दा हटाने का काम भी किया है। हीरक जयंती विशेष लेख पश्चिम रेलवे के सभी विभागों और मंडलों की प्रगति की जानकारी प्रस्तुत करते हैं। सांस्कृतिक हलचल, व्यंग्य वीथिका, स्वास्थ्य चर्चा, सखियों का संसार तथा स्वाद जो रहे हरदम याद कॉलम विगत अंकों की तरह अच्छे रहे। रेल दर्पण को सम्पूर्ण रूप से देखकर हम यह कह सकते हैं कि पत्रिका की पाठ्य सामग्री, छपाई और आकर्षकता ने इसे राष्ट्रीय स्तर पर खड़ा कर दिया है।

योगेंद्रसिंह 'कौशिक', वरिष्ठ पत्रकार

दैनिक नवज्योति, अजमेर में प्रकाशित समीक्षा

पश्चिम रेलवे द्वारा पिछले कुछ वर्षों से प्रकाशित की जा रही 'रेल दर्पण' पत्रिका अपने उद्देश्यों को लेकर निरन्तर उसी तरह आगे बढ़ रही है, जिस तरह रेलगाड़ी छुक-छुक करती हुई अपनी मंज़िल तक पहुँचने के लिए रफ्तार बढ़ाती है। रेल दर्पण के हीरक जयंती विशेषांक में 1951 से लेकर 2011 तक 60 वर्षों में रेलवे के गौरवमयी इतिहास को चित्रों एवं शब्दों के माध्यम से संजोया गया है। विशेषांक में 60 वर्षों की रेलवे का इतिहास दर्शाने के साथ-साथ पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक रवीन्द्रनाथ वर्मा, मुंबई सेन्ट्रल के मंडल रेल प्रबंधक गिरीश पिल्लई, रतलाम के मंडल रेल प्रबंधक एस.के. पाठक, राजकोट के मंडल रेल प्रबंधक वेद पाल, अहमदाबाद के मंडल रेल प्रबंधक अशोक एस. गरुड़, भावनगर के मंडल रेल प्रबंधक आर. कुण्ठन, वडोदरा के मंडल रेल प्रबंधक ए.के. श्रीवास्तव, मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी शरत चन्द्रान्न सहित रेलवे के अनेक वरिष्ठ अधिकारियों

संग्रहणीय है रेल दर्पण का हीरक जयंती विशेषांक

के विचार भी को पढ़ने को मिले। साथ ही रेलवे के आम कर्मचारियों की प्रतिभा को भी उजागर किया गया है। रेलवे के वर्तमान विकास कार्यों को भी रंगीन चित्रों के माध्यम से दर्शाया गया है। मुंबई के चर्चगेट स्टेशन के खूबसूरत चित्रों को प्रकाशित किया गया है। इसके अलावा रेलवे में होने वाली विभिन्न साहित्यिक व सांस्कृतिक गतिविधियों को भी स्थान मिला है। इसकी छपाई और इसका सम्पादन उत्कृष्ट है। पत्रिका के हिन्दी खंड के वरिष्ठ कार्यकारी सम्पादक गजानन महतपुरकर अजमेर से प्रकाशित 'दैनिक नवज्योति' के सम्पादकीय विभाग में कई वर्षों तक कार्य कर चुके हैं और उनका यह रचनात्मक अनुभव रेल दर्पण के समग्र सम्पादन में बखूबी नज़र आता है। यह विशेषांक रेल कर्मचारियों के लिए एक बड़ा संग्रहणीय दस्तावेज़ है।

महावीर सिंह चौहान, वरिष्ठ पत्रकार

स्थलों और दिलों को करीब लाती है... पश्चिम रेलवे !

प्रातःकाल, मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

पश्चिम रेलवे की अर्द्धवार्षिक गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' के 'हीरक जयंती विशेषांक' में इस बार एक नवीनता नज़र आयी है। पश्चिम रेलवे के समृद्ध तथा गौरवशाली अतीत को दर्शाती यह पत्रिका पश्चिम रेलवे के अतीत से वर्तमान तक की महत्वपूर्ण घटनाओं के उल्लेख से पूर्णतया लबरेज तथा संग्रहणीय है।

विशेषांक में पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक रवींद्र नाथ वर्मा ने अपने विशिष्ट लेख में मुस्कान के साथ सेवा के ध्येय से यातायात सुविधा, यात्री सुविधा, सुरक्षा आदि के क्षेत्रों में अग्रसर पश्चिम रेलवे द्वारा स्थापित कीर्तिमानों की सराहना की है। इस संस्करण में 'रेल दर्पण' के पाठकों को विशेष उपहार के तौर पर वर्ष 2011 के कैलेंडर के साथ ही पश्चिम रेलवे के गौरवशाली अतीत से परिचय कराते कुछ दुर्लभ छायाचित्र भी हैं, जो एक तरह से सोने पे सुहागा का कार्य करते हैं। 'कथा कुंज' स्तम्भ में समाहित 'श्राद्ध' तथा 'पवित्र पाप' शीर्षक की लघुकथाएँ ज्ञानवर्द्धक तथा सच्चाई का दर्पण दिखाने वाली हैं। जहाँ संतोष सुपेकर द्वारा लिखित 'पवित्र पाप' कहानी जाति धर्म से आगे बढ़कर सभी को मानवता का सबक सिखाती है, वहीं इसी कथा कुंज में श्रीमती इन्दु सिन्हा की

कहानी 'श्राद्ध' यथार्थ तथा विश्वास पर आधारित एक मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी कथा है। इसके साथ ही वैचारिकी में शीर्षक 'ब्ला-ब्ला की आग में झुलसता बचपन' में डॉ. शारदा सारसर ने बताया है कि किस तरह इस आधुनिक युग में माँ-बाप अपने स्टेटस तथा नकारात्मक प्रतिस्पर्धा के चलते अपने ही लाडलों के बचपन में अपनी अपेक्षाओं का ज़हर घोल उनका बचपन छीन रहे हैं। इस अंक के साथ ही पत्रिका ने 'जिंदगिली और उल्लास के हरकारे' नामक स्तम्भ शुरू किया है, जिसमें समाज के लिए प्रेरणा स्रोत पश्चिम रेलवे परिवार के कुछ सदस्यों का परिचय दिया गया है। पत्रिका का 'काव्यात्मक अभिव्यक्ति' स्तम्भ पाठकों के हृदय को छू जाने वाला है। इसके अतिरिक्त पत्रिका के अन्य विभिन्न स्तम्भ जैसे स्वास्थ्य चर्चा, मंडलों के अंचलों से, सामयिक गतिविधियाँ, तस्वीर बोलती है आदि काफी रोचक बन पड़े हैं। समग्र पत्रिका का रूप धारण कर रही यह पत्रिका पश्चिम रेलवे की सभी गतिविधियों को पूर्णतया अपने भीतर समाहित किये हुए है। यदि कहा जाये कि 'रेल दर्पण' एक अद्वितीय रेल पत्रिका है, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

✍ वंदभूषण शुक्ल, वरिष्ठ समीक्षक

पश्चिम रेलवे की शान : 'रेल दर्पण'

रेल दर्पण का हीरक जयंती विशेषांक अपने आप में किसी भी पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति का परिचायक है। रेल दर्पण को यदि हम पश्चिम रेलवे की शान कहें, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। सभी सम्पादकों द्वारा किये गये अनवरत व सतत प्रयासों का परिणाम इस विशेषांक के रूप में रंग लाया है। साथ ही पत्रकारिता के क्षेत्र में इस पत्रिका ने नये आयाम स्थापित किये हैं। जिस तरह भारतीय रेल देश की एकता व अखंडता को जोड़ने वाली एक मजबूत कड़ी है, उसी प्रकार रेल दर्पण भी विभिन्न भाषाओं को जोड़कर तथा सभी प्रकार की लेखन सामग्री को संकलित करके जन साधारण में सशक्त सूचना, ज्ञान का प्रकाश फैलाने तथा स्वस्थ मनोरंजन का माध्यम बनी है, जिसके लिए सम्पूर्ण सम्पादक मंडल बधाई का पात्र है। मैं कामना करता हूँ कि इसी प्रकार से यह लगातार प्रगति करे और पाठकों को बेहतर लेखन सामग्री उपलब्ध कराती रहे।

✍ डॉ. नरेन्द्र कुमार देपाल,

उप मुख्य विकिर्ता निदेशक, (स्वास्थ्य व.प.क.), वर्ग 12

सचमुच लाजवाब है रेल दर्पण!

'रेल दर्पण' का पिछला अंक पढ़ा। पढ़कर प्यासा मन तृप्त हो गया। इतनी लाजवाब पत्रिका के प्रकाशन पर सम्पादकजी एवं सम्पूर्ण सम्पादक मण्डल बधाई का पात्र है। हास्य-व्यंग्य, गीत, लघु कथा, कहानी, कविता से लबरेज आपकी रेल दर्पण रेलवे की जानकारीयों का भण्डार है। रेलवे की गतिविधियाँ एवं उसका इतिहास पाठकों को इस पत्रिका के माध्यम से आसानी से उपलब्ध होता है। इसकी छपाई आकर्षक एवं पृष्ठ इतने उत्कृष्ट दर्जे के हैं कि पत्रिका पर एक बार दृष्टि पड़े तो निहारते ही रहने की इच्छा होती है। आज जहाँ एक ओर पत्रिकाओं की गुणात्मकता कम हो रही है, वहीं उनके मूल्य आसमान छू रहे हैं। ऐसे वातावरण में आपके द्वारा इतनी उत्कृष्ट पत्रिका समाज को देना एक प्रकार की महान सेवा है। 'रेल दर्पण' सचित्र, साहित्यिक एवं ऐतिहासिक पत्रिका ही नहीं, बल्कि रेलवे का एक विश्वसनीय दस्तावेज़ भी है। ऐसी लाजवाब पत्रिका के लिए आपको पुनः बधाई।

✍ राजेंद्र देवधरे 'दर्पण',

वरिष्ठ व्यंग्यकार, अभिवेक नगर, उज्जैन

अनंत शुभकामनाएँ !

चंचल, बलखाती, इठलाती, चलती है हँसती गाती, जैसे किसी कवि की कविता, मन को मोह ले जाती। कुछ पल रुकती, पास बुलाती, फिर से आगे बढ़ जाती, राह में चलते हर राही को, अनुपम रूप से हर्षाती। भेद-भाव नहीं इसके मन में, मीठी, प्यारी इसकी बोली, प्यार बाँटती, सदा मुस्काती, पश्चिम रेल की रंगोली। है भरोसा हम को इस पर, लक्ष्य तक हमें पहुँचायेगी, अग्रसर राहों में सबका उज्ज्वल भविष्य बनायेगी। पश्चिम रेल की हीरक जयंती पर 'रेल दर्पण' को

हैं अनंत शुभकामनाएँ,

ऊर्जा से भरपूर रहे हमेशा

और नित नये कीर्तिमान बनाये!

✍ श्रीमती मीनू सिंगला

निदेशक, मेसर्स गोल्डमैन, विज्ञापन एजेंसी, मुंबई

समृद्ध सामग्री की धनी है 'रेल दर्पण'

प्रिय श्री चन्द्रायन जी,
आपकी गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' का 'हीरक जयंती विशेषांक' प्राप्त हुआ, बहुत-बहुत धन्यवाद। आपको व आपकी पूरी टीम को बहुत-बहुत पुबारकबाद, जिसने काफी मेहनत कर सुंदर छपाई व आकर्षक डिज़ाइन के साथ इसको प्रकाशित करवाया। सबसे अच्छी बात यह है कि इसके अंदर सामग्री भी बहुत Rich है। पुनः बधाई सहित,

✍ दीनबंधु चौधरी,

वेयरमैन एवं प्रधान सम्पादक,

दैनिक नवज्योति, अजमेर

रेल दिलों में बजता साज़ है !

भारतीय रेल जन-जन की आवाज़ है !
यात्रा के दौरान दिलों में बजता साज़ है !
हमने सफ़र में कितनों को ही हमसफ़र बनाया,
बहुत से अपरिचितों को हमेशा के लिए मिलाया,
यात्री हिंदू - मुस्लिम, या हो सिख - ईसाई,
सभी को इसने, एकता की ही बात सिखाई !
यह सुबह - शाम - रात चौबीसों घंटे चलती है,
यह सच है कि भारत की धड़कन रेलों में बसती है !
बेहतर रेल सेवा दे रहे, लाखों लोग इससे जुड़कर,
इसका काम सीधे चलना, कभी न देखती मुड़कर !
रोज लाखों को लाती - ले जाती, नहीं कोई अभिमान,
सेवा ही एक लक्ष्य, इसलिए रहती निरंतर गतिमान !
अपने सभी क्षेत्रों में, अपनी बेहतर भूमिका निभाई,
पश्चिम रेलवे को इस हेतु, मन से बहुत बधाई !
रेलों की बात कहती है, रेल पत्रिका 'रेल दर्पण',
मेरी यह रेल रचना है, इसको सादर अर्पण !

✍ ललित भाटी, सार्वत्र लेखक, इन्दौर

विशेष प्रतिक्रिया

सचमुच उत्कृष्ट कोटि की पत्रिका है 'रेल दर्पण'

मुझे यह लिखते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि पश्चिम रेलवे परिवार की जिस गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' का प्रकाशन 'हीरक जयन्ती विशेषांक' के रूप में किया गया है। उस की छपाई, साज-सज्जा बिल्कुल व्यावसायिक स्तर की है एवं आंतरिक पठन सामग्री भी सचमुच उत्कृष्ट कोटि की है। पत्रिका के माध्यम से विभिन्न विभागों के क्रमिक विकास की ऐतिहासिक जानकारी मिलती है। छोटे-छोटे विभागों जैसे मेडिकल, भंडार आदि को भी प्रतिनिधित्व मिला है। पत्रिका में अतीत की यादों को ताजा करते हुए विभिन्न छाया चित्र प्रकाशित किये गये हैं, जो अपनी विरासत की यादों को ताजा करते हैं। पाठक-पीठिका में दी गई प्रतिक्रियाओं में शीर्षक व अन्य लेखों के शीर्षक काव्यात्मक है, जो दिल की भावनाओं को छू जाते हैं। राजभाषा के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा के



लेखों का समागम बहुत अच्छा है तथा दोनों भाषाओं को बराबर महत्व दिया गया है। पत्रिका की सभी अच्छाइयों के साथ-साथ इसे और बेहतर करने के लिए मैं कुछ सुझाव भी देना चाहूंगा, जैसे कि 1) छपाई का फॉन्ट साइज काफी कम है एवं एक ही पेज पर कई-कई आर्टिकल दिये गये हैं, जिनसे लगता है कि पृष्ठ खचाखच भरा हुआ है। अतः फॉन्ट साइज बढ़ा दिया जाये। 2) पत्रिका किसी डिवीजन, विभाग या कारखाने को फोकस करके प्रकाशित की जाये, जिससे उस विभाग से सम्बंधित समस्त सामग्री उसमें प्रकाशित हो। अंत में, मैं पत्रिका के सम्पादक मंडल को उत्कृष्ट कार्य के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

मंगल राय,

निवर्तमान भंडार नियंत्रक, पश्चिम रेलवे, वर्ग-1

रेल दर्पण: कल, आज और कल

रेल दर्पण के हीरक जयन्ती विशेषांक को पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। इस विशेषांक में जिस तरह से भूत, वर्तमान और भविष्य को समाहित किया गया है उसके लिए रेल दर्पण की सम्पूर्ण टीम को ढेर सारी बधाई। श्री शरत चंद्रायन जी का सम्पादकीय पढ़कर ही आप पत्रिका की विशेषताओं को भाँप सकते हैं। मध्य पृष्ठ में श्री गजानन महतपुरकर जी द्वारा संकलित दुर्लभ छायाचित्रों का विशेष फीचर वास्तव में अद्भुत है। श्री राजू श्रीवास्तव का श्री.सी.नितिन कुमार डेविड द्वारा लिया गया इंटरव्यू ताज़गी देता है। पश्चिम रेलवे परिवार द्वारा किये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी पठनीय है। चर्चगेट स्टेशन का हो रहा कार्यालय भविष्य की झाँकी प्रस्तुत करता है। यह विशेषांक वास्तव में सारगर्भित व पठनीय साग्रगी का संकलन है। सम्पूर्ण रेल दर्पण टीम को पुनः बधाई।

दीपक जेठा,

ग्रंथ निदेशक, दीपक एडवर्टाइजिंग एजेंसी, इंदौर

उत्कृष्ट सम्पादन की बानगी 'रेल दर्पण'

महोदय,

आपके पत्र के साथ पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' के 'हीरक जयन्ती विशेषांक' की एक प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। इस विशेषांक में विशेष रूप से श्री के. के. अटल, मुख्य राजभाषा अधिकारी द्वारा लिखा गया लेख 'इतिहास के 6 दशक : राजभाषा की भूमिका सार्थक' पश्चिम रेलवे की राजभाषा के प्रति अप्रतिम आस्था उजागर करता है। पत्रिका में विभिन्न कविताएँ बहुत अच्छी हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत लुभावना है। पत्रिका में 2011 के कैलेन्डर में छपे फोटोग्राफ प्राचीन रेलवे का दर्शन कराते हैं और रेलवे का विकास दर्शाते हैं। पश्चिम रेलवे की विभिन्न गतिविधियों का भी ज्ञान होता है। उत्कृष्ट सम्पादन के लिए हार्दिक बधाई।

बी.के. मुखर्जी

वरिष्ठ उपा महालेखाकार (प्रशासन), मुंबई

पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' के 'हीरक जयन्ती विशेषांक' की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका का आवरण पृष्ठ व साज-सज्जा अन्य पत्रिकाओं से कुछ अलग लगी। इस अंक में एक नया स्तम्भ 'जिन्दादिली और उल्लास के हरकारे' पढ़ने को मिला, जो बहुत ही रोचक लगा। यह नया स्तम्भ अन्य लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत का भी काम करेगा। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक महोदय का शुभकामना एवं स्वतन्त्रता दिवस संदेश रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक लगा। 'हीरक जयन्ती पर विशेष लेख' स्तम्भ में विभिन्न रेल अधिकारियों द्वारा रेलवे से सम्बंधित विविध जानकारीयें उपलब्ध करायी गयी हैं, जो रेलवे के बाहरी व भीतरी तथा ऐतिहासिक व सम-सामयिक परिदृश्य को उजागर करती हुई प्रतीत हुई, जो वास्तव में बहुत ही रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक लगा। हमेशा की तरह इस बार भी काव्यात्मक अभिव्यक्ति, सांस्कृतिक हलचल, कथा-कुंज, वैचारिकी व्यंग्य-वीथिका, स्वास्थ्य चर्चा, मंडलों के अंचलों से, सामयिक गतिविधियाँ, तस्वीर बोलती है व सखियों का संसार आदि कॉलम बहुत ही रोचक एवं प्रेरणादायक रहे। पत्रिका के अंतिम पृष्ठ 'विशेष अतिथि रचनाकार' कॉलम के अन्तर्गत सुप्रसिद्ध कवि श्री सूर्यभानु गुप्त जी की दोनों गुंजलें मानव-जीवन के यथार्थ की बानगी पेश करती हैं। 'रेल दर्पण' पत्रिका से परोक्ष या अपरोक्ष रूप से जुड़े सभी सम्पादक मण्डल अधिकारियों एवं कर्मचारियों का मैं हार्दिक रूप से अभिनंदन करना चाहूंगा, जिनकी मेहनत, लगन और विवेक से यह पत्रिका ऐसी बन पड़ी है, कि जो भी इसका अवलोकन करता है, वह इसकी तरफ अनायास ही खिंचा चला जाता है और इसकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह पाता है। इस परिप्रेक्ष्य में संपादक मण्डल की भूमिका ठीक वैसी ही प्रतीत होती

रंग बिरंगे
विचार पुष्पों
की सुंदर
वाटिका है
'रेल दर्पण'

है, जैसे किसी वाटिका का माली अपने सभी फूलों एवं पेड़-पौधों को क्रमानुसार सुसज्जित व व्यवस्थित करके अपने परिश्रम से सौंघता व संचालित करता है। यदि वाटिका में कितने भी सुन्दर फूल व आकर्षक पेड़-पौधे लगा दिये जायें, परन्तु उन्हें सुसज्जित व व्यवस्थित करके न लगाया जायें, तो उनकी खूबसूरती उतनी नहीं रह पायेगी, जितनी होनी चाहिये। हालांकि प्रत्येक फूल व पेड़ पौधे की स्वयं की खूबसूरती तो रहेगी ही, परन्तु उसे माली द्वारा सुसज्जित व व्यवस्थित करके सौंघा व संचालित किया जाये तो उनकी खूबसूरती में चार-चाँद लग जायेंगे। पास से गुजरने वाले सभी लोग, उनकी खूबसूरती का गुणगान किये बिना नहीं रह सकेंगे। मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करूंगा कि 'रेल दर्पण' के सम्पादक मंडल के अधिकारियों और कर्मचारियों के अंदर इतना विवेक व क्षमता प्रदान करे कि वे अच्छी से अच्छी सामग्री दे सकें, जिससे कि 'रेल दर्पण' पत्रिका की खूबसूरती में उत्तरोत्तर वृद्धि हो और हर इंसान के दिलो-दिमाग पर यह ऐसी अमिट छाप छोड़े कि जन-मानस के दृष्टि-पटल पर इसकी छवि हमेशा के लिए अंकित हो जाये। अंतः में, मैं अपने विचारों को निम्न चार पंक्तियों द्वारा व्यक्त करना चाहूंगा-

“हर तरह से ऐसी सुसज्जित लगी ये, पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका 'रेल दर्पण'।
जैसे वाटिका को सँवारने में, माली ने किया हो, अपना तन-मन-धन समर्पण।
मेरी हार्दिक इच्छा यही कि, हर इंसान के दिल में यह पत्रिका करे पदार्पण।
जिससे जन-मानस के दृष्टि-पटल पर सदा के लिए अंकित हो जाए 'रेल दर्पण'।”

रजनीश प्रजापति, वरिष्ठ सहायक लोको पायलट, मुंबई

પશ્ચિમ રેલવે દ્વારા પ્રકાશિત છમાહી પત્રિકા કા 'હીરક જયંતી વિશેષાંક' અપને નયે રંગોં એવં નઈ જાનકારિયોં સે ભરા મિલા, જિનકા હમેં ઇન્તજાર થા। પત્રિકા કા અવલોકન કરને કે પશ્ચાત્ત યહ પતા ચલતા હૈ કિ પશ્ચિમ રેલવે જહાં એક તરફ નયે નેતૃત્વ કા સ્વાગત કરતી હૈ, વહીં દૂસરી તરફ ઇસકે બઢતે કદમોં ઓર નયે-નયે આયામોં કે માધ્યમ સે યાત્રિયોં કે ચેહરોં પર મુસ્કાન બનાયે રચને કે પ્રતિ ઇસકી પ્રતિબદ્ધતા ઝલકતી હૈ। પશ્ચિમ રેલવે કી સમ-સામયિક સૂચનાઓં કો જિસ પ્રકાર તસ્વીરોં ઓર ખબરોં મેં સમેટા ગયા હૈ, વહ કાફી પ્રશંસનીય હૈ। 'હીરક જયંતી વિશેષાંક' પશ્ચિમ રેલવે કે ગૌરવશાલી અતીત ઓર ગતિશીલ વર્તમાન કે વિસ્તૃત ઉલ્લેખોં સે ઉજ્જ્વલ ભવિષ્ય કા એહસાસ કરાતા હૈ। ઇસ વિશેષાંક મેં પિછલે સાઠ વર્ષોં કે મહત્ત્વપૂર્ણ ચિત્રોં કો યાદગાર કૅલેન્ડર કે રૂપ મેં દર્શાયા ગયા હૈ। સાથ હી પશ્ચિમ રેલવે પર વિભિન્ન ક્ષેત્રોં મેં હુએ વિકાસ કે વ્યાપક પહલુઓં સે અવગત કરાયા ગયા હૈ। સાથ-સાથ પશ્ચિમ રેલવે કે સમી મંડલોં એવં વિભાગોં મેં હુઈ પ્રગતિ કા વિવરણ, સમ્બંધિત મંડલ રેલ પ્રબંધકોં એવં વિભાગાધ્યક્ષોં કે વિશેષ લેખોં સે પતા ચલતા હૈ કિ પશ્ચિમ રેલવે કે હર અધિકારી ઓર કર્મચારી મેં એક કવિ ઓર લેખક બસતા હૈ, જિનકે દ્વારા રચિત કર્ડ જ્ઞાનપ્રદ એવં સંગ્રહણીય લેખ

રેલ પરિવાર કા સંગ્રહણીય દર્પણ હૈ 'રેલ દર્પણ'

પઢને કો મિલતે હૈ। 1951 મેં હુએ પશ્ચિમ ઓર મધ્ય રેલવે કે ઉદ્ઘાટન સમારોહ પર આધારિત લેખ ઓર ટાઇમ્સ ઓફ ઇન્ડિયા મેં પ્રકાશિત પ્રતિલિપિયાં પુરાની યાદોં કો તરોતાજા કરાતી હૈ। પ્રધાન સમ્પાદક શ્રી શરત ચંદ્રાયન કા લેખ જનસમ્પર્ક કે ઇતિહાસ એવં વર્તમાન કા સારગર્ભિત નિચોડ માલૂમ પડતા હૈ। ઇસ વિશેષાંક મેં મશહૂર ફિલ્મ અભિનેતા શ્રી જીતેન્દ્ર તથા મશહૂર હાસ્ય અભિનેતા શ્રી રાજૂ શ્રીવાસ્તવ કા સાક્ષાત્કાર ઓર ઇનકે દ્વારા શેયર કિયા ગયા પશ્ચિમ રેલવે કા અનુભવ જ્ઞાનવર્ધન કે સાથ-સાથ પત્રિકા મેં થી ચાર ચાંદ લગાતા હૈ। 'પશ્ચિમ રેલવે' કે વર્તમાન વિકાસ કાર્યોં કો રંગીન ચિત્રોં કે માધ્યમ સે દર્શાના, ચર્ચગેટ સ્ટેશન કે આધુનિકીકૃત ચિત્રોં કો પ્રકાશિત કરના, સાથ-સાથ રેલવે મેં હોને વાલી વિભિન્ન સાહિત્યિક વ સાંસ્કૃતિક ગતિવિધિયોં કો દર્શાના ઇસકી ઉત્કૃષ્ટ સંયોજન ક્ષમતા કો દર્શાતા હૈ। ઇસકે લિએ પત્રિકા કે વરિષ્ઠ કાર્યકારી સમ્પાદક શ્રી ગજાનન મહતપુરકર બધાઈ કે પાત્ર હૈ। કુલ મિલાકર પશ્ચિમ રેલવે કી ગૃહ પત્રિકા 'રેલ દર્પણ' સબ કે લિએ નિશ્ચિત તૌર પર એક રોચક એવં સંગ્રહણીય પત્રિકા હૈ। પત્રિકા કી પૂરી સમ્પાદકીય ટીમ કો બધાઈ ઓર ઇસકે ભવિષ્ય કે લિએ હમારી હાર્દિક શુભકામનાઈ।

પી. કે. વિરવાસ, પ્રબંધ નિદેશક, સૈનૅપ્લ એક્સટ્રાડિજિંગ એજંસી, મુંબઈ

A SPECIAL LETTER ABOUT 'RAIL DARPAN' FROM A NRI FROM CANADA

I am an ex-railway employee now settled in Toronto (Canada) for over 10 yrs. I worked in Estt. Br. for nearly 40 yrs and retired as Office Supdt. of E (Settlement) section. Today I chanced up on to see Rail Darpan of Jan 2008 and was happy to see it's content. Congratulations! Here in Canada I am a News Editor of Hindi Abroad (www.hindiabroad.com) for over 5 yrs. I also write Laghu Kathas (Short stories). If you log on to this website and go to "Latest Issue" and then to either page 5 or 9 you'll see my short story. My stories are the mirrors of Indian, Canadian and South Asian cultures. Also it reflects humanity. Manav sewa (Service to humanity) is seen only in India. Western countries give sermons on humanity and

community service. But in fact here in this part of the world, if you help a needy person the same person sues you for the damage caused to him by you!!! My story 'Kar Bhala' tells the same. 'Gaon ki Beti' is touching Hindu-Muslim unity topic. There are many more. Each story is different topic and gives one a different lesson to learn. I am also Founder President of Mehfil Group of Toronto. A social, cultural, literary group having 400 members cutting accross boundaries or race, region and religion. We help people visiting Toronto and also getting them settled if they have immigrated to this beautiful country with lots of resources. If possible, send me Rail Darpan by e-mail.

FIROZ KHAN, News Editor, Hindi Abroad, Toronto, Canada.

Dear Sir,

At the onset, I would like to thank you and your office for taking time to send me copies of 'Rail Darpan'. All of us at Sai Advertisers are truly fond of Rail Darpan, which we consider highly informative and educative. It's a creative bilingual magazine that provides deep insights on various activities of Railways, especially about the people who contribute immensely to uphold social causes and success of Railways. Also, the literary contribution from some of your

RAIL DARPAN IS HIGHLY INFORMATIVE !

senior team members are awe inspiring and highly motivating.

It's indeed a commendable achievement, which has been possible only due to your dynamic leadership and under your very able guidance!

I wish Rail Darpan success and I am sure that it will continue to provide interesting information allowing people to understand the Railways better!

GULSHEN PATEL,
Managing Director, Sai Advertisers, Mumbai

દિવ્ય ભાસ્કર, મુંબઈ મેં પ્રકાશિત સમીક્ષા

રેલવેના સમૃદ્ધ અને ગૌરવશાળી અતીતની જાખી તેમજ વિવિધ તસવીરો પ્રાણ સમાન છે. પશ્ચિમ રેલવેએ તેની ૬૦ વર્ષોની કારકિર્દીનો ઈતિહાસ વર્ણવતો દળદાર ગ્રંથ બહાર પાડ્યો છે. આ હીરક જયંતી વિશેષાંકની ખાસિયત પ. રે. ના મહાપ્રબંધક રવીન્દ્ર નાથ વર્માથી મુખ્ય જનસંપર્ક અધિકારી શરત ચંદ્રાયન સુધીના અધિકારીઓએ રેલવેની વિવિધ તસવીરોને આબાદ જીવંત કરી છે, જ્યારે વરિષ્ઠ કાર્યકારી સંપાદક ગજાનન મહતપુરકરની વિશેષ જહેમત ઊડીને આંખે વળગ્યા વિના રહેતી નથી. રેલવેના સમૃદ્ધ અને ગૌરવશાળી અતીતની જાખી અંકમાં થાય છે. વિવિધ તસવીરો પ્રાણ સમાન છે. આ સમયે પણ અલગ અલગ મંડળોના પ્રબંધકોને પોતાની સિદ્ધિઓ જણાવવાનો

પશ્ચિમ રેલવેએ ૬૦ વર્ષોની સફરનો ગ્રંથ બહાર પાડ્યો !

અવસર પ્રાપ્ત થયો છે ત્યાં તેમણે ચિકિત્સા-વિદ્યુત-ભંડાર-સુરક્ષા અને યાત્રી સેવાઓ બાબતે કરેલા પુરુષાર્થને મહત્ત્વ આપવામાં આવ્યું છે. પશ્ચિમ રેલવેમાં પ્રવેશ પામેલી મોટરવુમનને પ્રોત્સાહિત કરવા વિશેષ માહિતી ભંડાર અહીં ખોલી આપવામાં આવ્યો છે. રાજભાષાની સાર્થકતા પર મુખ્ય રાજભાષા અધિકારી કે. કે. અટલનો નિબંધ સુંદર છે. વાચકોને પ્રિય સુઝોડું, વ્યંગ્ય, રેલવાઈ, સ્વાસ્થ્ય ચર્ચા અને કથાકુંજ જેવા વિભાગ સામેલ કરાયા છે. અંકમાં અંગ્રેજી વિભાગ પણ સામેલ કરવામાં આવ્યો છે. પી. આર. ના વિશેષ ફીચર ઉપરાંત ડાન્સિંગ મેન જિતેન્દ્રનો ઈન્ટરવ્યુ પણ છે. ચર્ચગેટ સ્ટેશનના સૌંદર્યકરણ પ્રોજેક્ટ પરનું વિશેષ ફોટો ફીચર સુધ્ધાં છે.